www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16
सृष्टि संवत् 1960853117
विक्रम संवत् 2073
दयानन्दाब्द 193

सेवा में,

4

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 13 अंक : 22 रोहतक, 7 नवम्बर, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

निराले ऋषि की निराली दिवाली

❑ डॉ० महेश विद्यालंकार

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय' दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। असत्य से सत्य, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृतत्त्व, पाप से पुण्य, शरीर से आत्मा और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलने का प्रेरणा-पर्व है। आज बहिर्जगत् में रोशनी, चमक-दमक, भौतिक उन्नति-प्रगति, सुख-साधन आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। अन्तर्जगत् में अन्धकार, जड़ता, अशान्ति, असन्तोष, इच्छाएं, वासनाएं, ईर्ष्या-द्वेष, अहंकार आदि का अंधेरा तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह पर्व प्रतिवर्ष ज्ञान रूपी प्रकाश लाने व फैलाने का अमर सन्देश देने आता है। यदि जीवन जगत् को सुखी, शान्त, सन्तुष्ट और सर्वे भवन्तु सुखिनः बनाना है तो सत्ज्ञान की आँखें खोलकर, जीओ व चलो तभी संसार में विश्व-शान्ति, विश्व-बन्धुत्व तथा विश्व-मानवता की दृष्टि, विचार एवं भावना आ सकेगी।

दीपावली का पर्व आर्यसमाज के इतिहास में प्रेरक स्मरणीय एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषिवर देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमरबेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच-भौतिक नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप-त्याग, तपस्या, सेवा, उपकारों, योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति-दिवस है। युगों के बाद वरदान रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा-बेला है। वह देवपुरुष जाते-जाते भी असंख्य ज्ञानदीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन दृष्टि दे गया। उसी मुक्तात्मा की अमर कहानी दीवाली हर वर्ष दुहराने आती है। ऐसी देवात्माएं दुनिया में कभी-कभी आती हैं। प्रभु की इच्छा से आती हैं और उसी की इच्छा में अपनी इच्छा को पूर्ण मानकर विदा हो जाती हैं। ऋषि का जीवन भी निराला था और दीवाली भी निराली थी। ये प्रेरक पंक्तियां सत्य हैं—

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा, तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य।

आर्यसमाज ऋषि का जीवन्त स्मारक है। ऋषि का समग्र जीवन-दर्शन, मन्तव्य, विचार, सिद्धान्त, उद्देश्य, आदर्श आदि आर्यसमाज को वसीहत, विरासत तथा परम्परा में मिले। इन्हीं का प्रचार-प्रसार एवं पालन करना ही आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। जितना आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार-प्रसार और अनुयायी बढ़ेंगे, उतने स्वामी दयानन्द अमर होंगे। आज हम आर्यों के समक्ष ऋषि दयानन्द आर्यसमाज और सिद्धान्तों की रक्षा व प्रचार का ज्वलन्त प्रश्न खड़ा हुआ है। यदि इस पर सब मिलकर गंभीरता पूर्वक ईमानदारी, त्यागभाव, सेवाभाव आदि की दृष्टि से चिन्तन-मनन व क्रियान्वयन नहीं करेंगे तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा।

यदि जीवन को जीवित-जागृत व अमर रखना है तो आर्यसमाज को अपने सत्य-स्वरूप को पहिचानना होगा। ऋषि दयानन्द ने जीवन भर नाम, यश, सुख, आराम आदि के लिए न चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मन्दिर, स्मारक, गद्दी आदि नहीं बनाई। वे रातों में जागकर जीवन जगत् में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, पाप, अधर्म, अन्धविश्वास आदि के लिए घण्टों करुण-क्रन्दन किया करते थे—**'हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है।'** यह पीड़ा ऋषि की थी। वह युगपुरुष सारा जीवन जहर पीता रहा, पत्थर सहता रहा, गालियाँ, विरोध सुनता रहा। बदले में संसार को दया और आनन्द लुटाता रहा। वह सत्य का पुजारी जीवन भर असत्य, अधर्म, गुरुडम, मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा वेदविरुद्ध बातों से अकेला लड़ता रहा, कभी गलत बातों से समझौता नहीं किया। सारे जीवन में कहीं भी चारित्रिक दुर्बलता, अर्थ व पद-लोभ नहीं आने दिया। वह दिव्यात्मा हर पहलू से खरा ही उतरा। उनके कट्टर विरोधी, आलोचक भी अन्दर से प्रशंसक ही रहे। वह देवपुरुष उनसठ साल के डेपुटेशन पर संसार में आया था। घोर अविद्या में डूबी मानव जाति को वेदपथ और सन्मार्ग दिखाकर चला गया। सत्य तो यह है कि दुनिया ने ऋषि को समझा, जाना और माना ही नहीं।

दीपावली पर समस्त आर्यसमाज व ऋषिभक्त ऋषि की स्मृति को निर्वाणोत्सव के रूप में मनाते हैं। निर्वाण शब्द मुक्त होना, आगे बढ़ जाना और बुझ जाने के अर्थ में आता है। अजमेर के भिनाई भवन में अन्तिम समय में ऋषिवर शान्त भाव से लेटे थे। सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। वह महायोगी अनुभव कर रहा था-आज प्रयाण बेला है। पूछा-आज कौन-सा मास, पक्ष व दिन है? भक्त ने कहा-आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीवाली का पर्व है। पूरे शरीर पर भयंकर फफोले थे। फिर भी उनका मुखमण्डल शान्त व प्रसन्न था। सबको संगठित होकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। थोड़ी देर बाद बोले-सभी खिड़कियां, दरवाजे खोल दो। प्रार्थना-मन्त्रपाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्तभाव में मुख से उच्चरित होने लगा-हे दयामय, सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अद्भुत तेरी लीला है। यह कहकर लम्बी श्वास खींची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा देवता अपनी इहलीला समाप्त कर प्रभु की शरण में चला गया। सभी भक्तजन असहाय होकर देखते रहे। पं० गुरुदत्त जी पहली बार ऋषि के दर्शन करने आये थे। ईश्वर पर उनकी दृढ़ आस्था नहीं थी। ऋषि की अन्तिम यात्रा के अपूर्व दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त पक्के ईश्वर विश्वासी आस्तिक बन गए। उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन ऋषि-मिशन के लिए समर्पित कर दिया। जाते-जाते भी ऋषि गुरुदत्त जी को ईश्वर-विश्वास का संदेश दे गए। ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक व शिक्षाप्रद था। मृत्यु भी प्रेरक बनी। दीवाली पर प्रभु भक्त योगी का विदा होना, सन्देश दे रहा है—वेदज्ञान की ज्योति को जलाये रखना और आर्यसमाज को आगे बढ़ाते रहना। संसार के इतिहास में मृत्युञ्जयी ऋषि ऐसे थे जो होश में, तिथि पूछकर, स्नान-प्रार्थना करके, प्रभु का स्मरण-धन्यवाद करते हुए, अपने विषदाता को क्षमा दान देकर प्रभु तेरी इच्छा

क्रमशः पृष्ठ 2 पर.....

www.thearyasamaj.org

उपासक उपास्य सम्बन्ध

❑ नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

कोई भी उपासक किसी की उपासना क्यों करता है? उपासना की विधि क्या है और उपास्य देव कौन है? ये प्रश्न किसी भी उपासक के मन में उपासना के लिए उद्यत होने से पूर्व अक्सर ही उठते हैं। किसी भी उपासक के लिए अपने उपास्य देव को जानना, मानना फिर उपासना करते हुए उस उपासना के उद्देश्य को प्राप्त करना होता है। उपास्य देव को पहचानने से पूर्व उपासक को अपनी स्थिति का बोध होना अत्यन्त आवश्यक है। आइये, इन प्रश्नों पर एक-एक कर विचार करते हैं।

प्रथम उपासक कौन? जिसमें भी किसी गुण विशेष का अभाव और उसके मन में उस गुण को प्राप्त करने की बलवती इच्छा जब उत्पन्न हो जाती है तब वह व्यक्ति सर्वप्रथम उस गुण विशेष सम्पन्न मित्र जो उसे वह गुण देकर कष्ट से मुक्त कर सके, उसकी खोज करता है। सरल शब्दों में यदि कोई निर्धन व्यक्ति धन चाहता है तो वह धन प्राप्ति की इच्छा से अपने ऐसे किसी मित्र की खोज करके उपासना करेगा जो उसे धन प्रदान कर निर्धनता के कष्ट से मुक्ति दिलवा सके। इसी प्रकार रोगी वैद्य की, भूखा किसी लंगर चलाने वाले की खोज करके उपासना करता है। दूसरे शब्दों में उपासक वह है जिसमें किसी गुण का अभाव है और उस गुण के अभाव के कारण वह कष्ट की स्थिति में है। उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि उसे इस बात का बोध हो कि उसमें किस गुण का अभाव है और उस अभाव के कारण होने वाले कष्ट को दूर करने के लिए उसमें उस गुण की ग्राह्यता के लिए बलवती इच्छा उत्पन्न हो। तीसरा वह किसी ऐसे व्यक्ति को खोजे जिसमें वह गुण पूर्व से ही विद्यमान हो। चौथा वह गुणी उपास्य उस गुण को उपासक को देने की इच्छा भी रखता हो। अन्तिम उपासक को अपने उपास्य देव की उपासना विधि का ज्ञान हो।

सामान्य लोक व्यवहार में हम अबोध मनुष्य उपासना के नाम पर क्या प्रपंच करते हैं। तेजी से गाड़ी चलाते सड़क के किनारे किसी पीर की मजार या मन्दिर के सामने धीरे से मस्तक झुका देना या फिर बहुत किया तो मन्दिर में जाकर किसी मूर्ति के समक्ष माथा झुकाना और चढ़ावा चढ़ाकर अपनी मांग रख देना जैसे उपासना ना हुई कोई व्यापार हो गया। ''सवा मणी करूंगा मेरी लाटरी लगा दे, मेरी मन्नत पूरी होने पर यह चढ़ावा चढ़ाऊंगा या फिर हे बजरंगबली तोड़ दुश्मन की नली'' इन सब में ना तो उपासक को अपनी स्थिति का बोध है ना उपास्य देव का और न ही उपासना की विधि का। यह उपासक को पता ही नहीं कि उसमें कौन-सा गुण न्यून है और वह गुण उपास्य देव के पास है या नहीं और वह उसे कैसे पा सकता है। एक चेतन जीव द्वारा जड़ की उपासना से चेतनता की वृद्धि कैसे हो सकती है—

कलियुग के इंसान की, उल्टी देखी चाल।
जड़ के आगे चेतना, क्यों झुकावे भाल॥

जड़ की उपासना से तो चेतन के भी जड़ बन जाने की संभावना होती है, जबकि यदि कोई जड़ पदार्थ कोई समर्थ चेतन कारीगर के हाथ लग जाये तो उसमें गति अवश्य आ जाती है। जैसे घड़ीसाज के हाथ में घड़ी और मैकेनिक के हाथ में मोटर। इतना सब समझते हुए भी मनुष्य के रूप में मननशील होकर भी हम उपासक ना तो अपनी स्थिति को जान पाते हैं ना ही अपने गुणों की न्यूनता को और ना ही उपास्य देव जिसके पास वह गुण हों और उन्हें देने की इच्छा और सामर्थ्य रखता हो।

आइये, इन प्रश्नों के उत्तर खोजते हैं। मनुष्य के रूप में जीव एकदेशीय होने के कारण अल्पज्ञ व अबोध है और ज्ञानप्राप्ति के लिए वह अन्यों पर निर्भर है। सृष्टि के निर्माण से पूर्व और संहार के बाद भी रहने वाला सर्वव्यापी सृष्टिकर्त्ता सर्वज्ञ है और उस सर्वज्ञ ईश्वर ने सृष्टि के समस्त प्राणियों के लिए वेदरूपी ज्ञान एक नियमावली संहिता के रूप में दिया है। अब अल्पज्ञ उपासक के लिए आवश्यक हो जाता है कि वह उस सर्वज्ञ प्रभु द्वारा दिए वेदज्ञान को प्राप्त करे। इसीलिए महर्षि देवदयानन्द ने वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परमधर्म बतलाया है। यदि हम में दया की कमी है तो हम परम दयालु परमपिता परमेश्वर से इस गुण को प्राप्त करें। ईश्वर न्यायकर्त्ता है तो हम भी अपने आचरण व्यवहार में दूसरों के साथ न्याय किया करें। हम अल्पशक्तिमान् हैं और किसी भी सर्वहितकारी कार्य की सिद्धि के लिए व निष्काम भाव से यज्ञीय कार्य करने के लिए अपने सही दिशा में किए पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ईश्वर से प्रार्थना उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए सहाय के लिए किया करें। वही ईश्वर हमारा सच्चा सहायक व मित्र है। '**इन्द्रस्य युज्यः सखा**' कहकर वेद भगवान् परमात्मा को जीवात्माओं का सच्चा मित्र कहा। ऋग्वेद में '**दूणाशं सख्यं**' कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता स्थायी और विश्वसनीय है और इसी मंत्र में '**गौरसि वीर गव्यते**' तथा '**अश्वो अश्वायते भव**' कहकर स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर की मित्रता से गाय चाहने वाले को गाय और अश्व चाहने वाले को अश्व मिलता है, जिससे स्पष्ट है कि निष्काम भाव से किए जाने वाले परोपकार के यज्ञीय कार्यों के लिए सही दिशा में किए पुरुषार्थ के उपरान्त उपासना करते हुए हम उपासक मनुष्यों के लिए अपने उपास्य देव से निश्चित ही सहायता प्राप्त होती है। लेकिन यहां यह भी स्पष्ट है कि '**इन्द्रस्य इज्जरत सखा**' अर्थात् ईश्वर उनकी सहायता करता है जो अपनी सहायता स्वयं करने के लिए उद्यत हो। इससे स्पष्ट हो जाता है कि गुणों के अभाव के कारण हम अल्पशक्ति वाले अबोध, अज्ञानी मनुष्य उन गुणों की प्राप्ति के लिए सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् दयालु सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वव्यापी निराकार ईश्वर की उपासना उन गुणों की प्राप्त के लिए किया करें और उपासक उपासना करते समय अपने आत्मा को सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा के आनन्द में निमग्न कर दें और आत्मा परमात्मा के आनन्द में निमग्न होकर नर्तन करने लगे लेकिन कभी सत्य और चेतन के आधार के बिना प्राप्त नहीं हो सकता। उपासना करते हुए उपासक उपास्य देव से उन गुणों को प्राप्त करके एकरूप हो जाता है।

निराले ऋषि की निराली.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

पूर्ण हो, कहते हुए गए। ऐसी अद्भुत, चमत्कारी प्रेरक मृत्यु निराले मुक्तात्मा को ही सौभाग्य से मिलती है। ऋषिवर! तुम धन्य हो! तुम्हारा तप-त्याग, सेवाभरा आजीवन संघर्षपूर्ण इतिहास स्वर्णिम व प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार व योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय हैं। तुमने न जाने कितने जीवन-पथ से भटके हुए लोगों को नवजीवन दिया। तुमने भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा जिसने तुम्हें देखा, सुना, पढ़ा और जो सम्पर्क में आया, वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम सत्य के अन्वेषक वक्ता, पुजारी, प्रचारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। तुम्हारा दूसरा पर्याय और कोई नहीं हुआ।

दीवाली ऋषि-स्मृति पर्व है। उस महामानव के उपकारों, योगदान, महत्त्व, विशेषताओं आदि को स्मरण व कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्यतिथि है। संकल्प लेने, दुहराने और अपने को सुधारने की मंगल बेला है। ऋषिभक्तो! आर्यो! उठो! जागो! आंखें खोलो! अपने स्वरूप को पहिचानो! अन्तस में ज्ञानदीप जलाओ! प्रतिवर्ष परम्परागत दीवाली आती है। हम आर्यजन भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाते हैं, मेला लगता है, भाषण होते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्त्तव्य पूरा समझ लेते हैं? सोचो! क्या निर्वाणोत्सव की यही मूल चेतना, सन्देश व भावना है? ये पर्व, जयन्तियां, उत्सव, वेदकथाएं, यज्ञ, सम्मेलन आदि हमें जगाने, संभालने, आत्मबोध व सत्य बोध कराने आते हैं और दृष्टि, सोच-विचार, व ज्ञान देते हैं। क्या खोया? क्या पाया? कहां के लिए चले थे? कहां जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों, आदर्शों, विचारों, सिद्धान्तों व नवजागरण के लिए जीवन बलिदानी ऋषि ने आर्यसमाज बनाया था, जो हमें कर्त्तव्य व जिम्मेदारी सौंपी थी, ऋषि श्रद्धांजलि और ज्योति-पर्व हम से पूछ रहा है? उन कार्यों के लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या हमारा जीवन आर्यत्वपूर्ण है? कुछ भी नहीं किया तो कुछ करने का विचार, संकल्प व व्रत लो। अब जाग जाओ, तभी सबेरा है। ऋषिभक्त, आर्यसमाज के अनुयायी कहलाना है तो उनके बताए रास्ते पर चलो।

यह ऋषि स्मृति का प्रकाश पर्व कह रहा है अपने अन्दर के व्यर्थ के अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, पद-प्रतिष्ठा आदि के अज्ञान को ज्ञान, विचार, विवेक से हटाओ। मूल में भूल हो रही है। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों, समस्याओं आदि में समय, शक्ति, धन व सोच को मत लगाओ। आर्यसमाज के पास बहुत बड़ी विचार सम्पदा है, उसको संभालो। तभी ऋषि निर्वाणोत्सव की सार्थकता, उपयोगिता तथा सच्ची ऋषि श्रद्धाञ्जलि होगी।

www.thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

नवम समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 619. जैसे घटाकाश, मठाकाश, मेघाकाश और महदाकाश के भेद व्यवहार में होते हैं, वैसे ही ब्रह्म के ब्रह्माण्ड और अन्त:करण उपाधि के भेद से ईश्वर और जीव का नाम होता है। जब घटादि नष्ट हो जाते हैं वह महाकाश ही कहलाता है।

उत्तर-यह भी बात अविद्वानों की है, क्योंकि आकाश कभी छिन्न-भिन्न नहीं होता। व्यवहार में भी 'घड़ा लाओ' इत्यादि व्यवहार होते हैं, कोई नहीं कहा कि घड़े का आकाश लाओ। इसलिए यह बात ठीक नहीं।

प्रश्न 620. जैसे समुद्र के बीच मच्छी, कीड़े और आकाश के बीच में पक्षी आदि घूमते हैं, वैसे ही चिदाकाश ब्रह्म में सब अन्त:करण घूमते हैं। वे स्वयं तो जड़ हैं परन्तु सर्वव्यापक परमात्मा की सत्ता से जैसा कि अग्नि से लोहा उष्ण होता है वैसे चेतन हो रहे हैं। जैसे वे चलते फिरते और आकाश तथा ब्रह्म निश्चल हैं, वैसे जीव को ब्रह्म मानने में कोई दोष नहीं आता।

उत्तर-यह भी तुम्हारा दृष्टान्त सत्य नहीं, क्योंकि जो सर्वव्यापी ब्रह्म अन्त:करणों में प्रकाशमान होकर जीव होता है तो सर्वज्ञादि गुण उसमें होते हैं या नहीं? जो कहो कि आवरण होने से सर्वज्ञता नहीं होती तो कहो कि ब्रह्म आवृत और खण्डित है वा अखण्डित? जो कहो कि अखण्डित है तो बीच में कोई परदा नहीं डाल सकता। जब परदा नहीं तो सर्वज्ञता क्यों नहीं? जो कहो कि अपने स्वरूप को भूलकर अन्त:करण में ब्रह्म फंस गया, तो ब्रह्म नित्य मुक्त नहीं। और ब्रह्म अन्त:करण के साथ चलता है वा नहीं? तो यही कहोगे कि नहीं। जब नहीं चलता तो अन्त:करण जितना-जितना पूर्व प्राप्त देश को छोड़ता और आगे-आगे जहाँ-जहां सरकता जाएगा वहां का ब्रह्म भ्रान्त, अज्ञानी हो जाएगा और जितना-जितना छूटता जाएगा वहां-वहां का ज्ञानी, पवित्र और मुक्त होता जाएगा। इसी प्रकार सर्वत्र सृष्टि के ब्रह्म को अन्त:करण बिगाड़ा करेंगे और बन्ध-मुक्ति भी क्षण-क्षण में हुआ करेगी। इसलिए ब्रह्म जीव वा जीव ब्रह्म एक कभी नहीं होता, सदा पृथक्-पृथक हैं।

प्रश्न 621. अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का स्थापन करना 'अध्यारोप' कहाता है वैसे ही ब्रह्म वस्तु में सब जगत् और इसके व्यवहार का अध्यारोप करने से जिज्ञासु को बोध कराना होता है। वास्तव में सब ब्रह्म है।

उत्तर-अब प्रश्न यह है कि अध्यारोप करने वाला कौन है? यदि तुम कहते हो जीव, तो जीव तुम किस को कहते हो? यदि तुम जीव अन्त:करण अविच्छिन्न को कहते हो तो अन्त:करण अविच्छिन्न दूसरा है वा वही ब्रह्म? यदि तुम कहते हो कि वही ब्रह्म है तो क्या ब्रह्म ही ने अपने में जगत् की झूठी कल्पना नहीं कर ली, तो आप कहेंगे कि ब्रह्म की इसमें क्या हानि है? तो जो मिथ्या कल्पना करेगा क्या वह झूठा नहीं होगा? आप कहेंगे नहीं, क्योंकि जो मन, वाणी से कल्पित वा कथित है वह झूठा है। फिर, मन वाणी से झूठी कल्पना करने और मिथ्या बोलने वाला कल्पित और मिथ्यावादी हुआ वा नहीं? आप कहेंगे हो, हम को इष्टापत्ति है।

उपरोक्त कथन से आपने सत्य-स्वरूप, सत्यकाम और सत्य-संकल्प परमात्मा को मिथ्याचारी कर दिया। किस उपनिषद्, सूत्र वा वेद में लिखा है कि परमेश्वर मिथ्या संकल्प और मिथ्यावादी है? यह तो वही बात हुई 'उलटा चोर कोतवाल को डाटे', वैसे ही तुम मिथ्या संकल्प और मिथ्यावादी होकर वही अपना दोष ब्रह्म में व्यर्थ लगाते हो।

प्रश्न 622. मुक्ति किस को कहते हैं?

उत्तर-जिस में छूट जाना हो उसको मुक्ति कहते हैं।

प्रश्न 623. किससे छूट जाने को मुक्ति हैं?

उत्तर-दु:ख से छूट जाने को मुक्ति कहते हैं।

प्रश्न 624. दु:ख से छूटकर किसको प्राप्त होते और कहां रहते हैं?

उत्तर-सुख को प्राप्त होते और ब्रह्म में रहते हैं।

क्रमश: अगले अंक में....

अजीब पहेली

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

गतांक से आगे....

दूसरी बैठक

जन्म-मरण की पहेली को समझने के लिए पहली बैठक से भी अधिक श्रोता आज बड़ी उत्सुकता से यहां आए हैं। संगीतप्रिय जी ने एक मधुर भजन से सबको मंत्रमुग्ध किया। तब सर्वप्रिय जी मंच पर विराजमान हुए और कहा कि सज्जनो! हमने पहली बैठक में कठ-उपनिषद् के संकेत के अनुसार कृषि प्रक्रिया के आधार पर कुछ विचार किया था। आज के सत्संग में पहले जन्म और मरण शब्द पर कुछ विचार किया जाएगा। जिससे किसी की मृत्यु पर अकस्मात् हतप्रभ होने वालों के मन में उभरने वाली जिज्ञासाओं को शान्त किया जा सके।

जन्म की परिभाषा-जन्म शब्द जनि (प्रादुर्भावे) धातु से बनता है, जिसका अर्थ है-पैदा होना, प्रकट होना। जब कोई चीज पैदा होती है या बनती है, तो उसको बनाने वाला कुछ वस्तुओं को लेकर अपने औजारों की सहायता से उस-उस को बनाता है। जैसे कि हलवाई बर्फी बनाने के लिए दूध को आग पर रखता है, दूध उबल-उबल कर गाढ़ा हो जाता है, फिर वह उसमें यथासमय मीठा आदि डालता है। इस प्रकार दूध बाह्य रूप में कई परिवर्तनों के बाद बर्फी के रूप में सामने आता है। पैदा होने वाली वस्तु को कार्य और जिनके मेल से वह बनती है, उनको कारण कहते हैं। कारण के गुणों का कार्य पर प्रभाव होता है। जैसे कि रोटी रूपी कार्य में आटा, पानी, आग आदि का कारण होते हैं और जैसा नमकीन, मीठा, कनक, मक्की आदि का आटा होता है, वैसी ही रोटी बनती है।

दूसरी पैदा होने वाली चीजों में जैसे कई चीजों का मेल होता है, ऐसे ही हमारे जन्म के रूप में आत्मा, मन और इन्द्रियों का मेल होता है। शरीर शब्द सारे धड़ के लिए आता है, शरीर में ऊपर से लेकर नीचे तक आंख, कान, नाक, त्वक्, जिह्वा के रूप में पांच ज्ञान इन्द्रियां हैं। जो रूप, शब्द, गन्ध, स्पर्श तथा रस का ज्ञान कराती हैं। वाणी, हाथ, पैर, मल-मूत्र इन्द्रियां कर्म-इन्द्रियां हैं, जो बोलने, पकड़ने, छोड़ने, चलने आदि का कार्य करती हैं।

हमारे शरीर में सांस लेने, छोड़ने और शरीर धारण का कार्य प्राण करते हैं। जैसे हम आंख से बाहर के दृश्यों को देखते हैं, वैसे ही हमारे अन्दर भी सोचने, निर्णय करने, पिछली यादें याद करने और मैं और मेरेपन की भावना प्रकट करने की भी बात होती है। जिनके द्वारा ये कार्य होते हैं, उनको अन्त:करण (अन्दर की इन्द्रियां, साधन) कहते हैं और ये मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार के नाम से चार हैं। प्राण, इन्द्रिय, अन्त:करण जिसकी चेतना, प्रेरणा से अपना-अपना कार्य करते हैं, वही आत्मा है। यह अजर-अमर आत्मा ही शरीर का अधिष्ठाता तथा संचालक है।

जब हम कोई चीज खाते हैं, तो खाते ही स्वाद से पता चलता है कि इसमें किस-किस चीज का स्वाद या मेल है। जैसे कि रसगुल्ला खाते समय पनीर, मीठे और बनाने की कला का पता चल जाता है। चटनी चखने पर पोदीने, प्याज, अनारदाना या खटास (इमली, अम्बी), नमक, मिर्च का अनुभव होता है। ऐसे ही जब हम अपने जीवन व्यवहार पर विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि हमारे इन व्यवहारों में यह अंश या कार्य शरीर द्वारा होता है, यह इस बाह्य इन्द्रिय के द्वारा होता है और यह अन्त:करण के माध्यम से होता है। जैसे कि जाग्रत अवस्था में सारी इन्द्रियां-मन और आत्मा से जुड़कर अपना-अपना कार्य करती हैं। स्वप्न अवस्था में बाहर की इन्द्रियां सो जाती हैं, तब मन आत्मा की चेतना से अनेक तरह की कल्पनाएं करता है। सुषुप्ति=गाढ़ निद्रा में मन भी सो जाता है, तब केवल आत्मा और प्राण जागते हैं। उदाहरण के लिए जब हमारे सामने कोई चीज आती है, तो आंख उसके हरे, नीले आदि रूप को तथा आकार को बताती है, त्वचा उसके नर्म-कठोर, उष्ण-शीत स्पर्श का अनुभव करती है। नासिका से उसके गन्ध का बोध होता है। चखने पर रसना से उसके स्वाद का पता चलता है और मन उसके सम्बन्ध में अनेक तरह की ऊहापोह करता है, बुद्धि निर्णय करती है।

क्रमश:

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य-चर्चा... अदरक त्वचा को बनाता है आकर्षक व चमकदार

- पाचन की समस्या होने पर रोजाना सुबह अदरक का एक टुकड़ा खाएं।
- शरीर में वसा का स्तर कम करने में भी अदरक काफी मददगार है।
- भूख न लगना, पेचिश, खांसी-जुकाम आदि में लाभदायक है अदरक।
- यह गर्भवती महिलाओं को मार्निंग सिकनेस से निजात दिलाता है।

सर्दियों के मौसम में अदरक की चाय मिले, तो कहना ही क्या। लेकिन चाय समेत हमारे भोजन को जायकेदार बनाने वाला अदरक खूबसूरती को बढ़ाने में भी मददगार साबित होता है। अदरक को आप फल-सब्जी या फिर दवा भी मान सकते हैं।

अदरक के चिकित्सीय गुणों की जानकारी पुरातन चिकित्सा पद्धति में भी आसानी से देखी जा सकती है। ब्लड शुगर को यह नियंत्रित भी करता है, इसके अलावा यह कैंसर जैसी घातक बीमारी के खतरे को भी कम करता है अदरक। आइए हम आपको गुणों से भरपूर अदरक के फायदे के बारे में बताते हैं।

अदरक के गुण

त्वचा को निखारे-अदरक त्वचा को आकर्षक व चमकदार बनाने में मदद करता है। सुबह खाली पेट एक गिलास गुनगुने पानी के साथ अदरक का एक टुकड़ा खाएं। इससे न केवल आपकी त्वचा में निखार आएगा बल्कि आप लंबे समय तक जवां दिखेंगे।

बीमारियों में रामबाण-दवा के रूप में अदरक का प्रयोग गठिया, आर्थराइटिस, साइटिका और गर्दन-रीढ़ की हड्डियों के रोग (सर्वाइकल

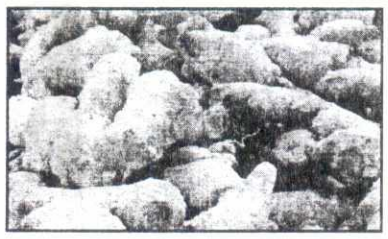

स्पांडिलाइटिस) में प्रमुखता से किया जाता है। इसके अलावा भूख न लगना, पेचिश, खांसी-जुकाम, शरीर में दर्द के साथ बुखार, कब्ज, कान में दर्द, उल्टी होना, मोच और मासिक धर्म की अनियमितता दूर करने में अदरक का प्रयोग किया जाता है।

कैंसर प्रतिरोधी-अदरक में कोलेस्ट्राल का स्तर कम करने, रक्त का थक्का जमने से रोकने, एंटी-फंगल और कैंसर प्रतिरोधी गुण भी पाए जाते हैं। **मार्निंग सिकनेस से निजात**-अदरक गर्भवती महिलाओं को होने वाली मार्निंग सिकनेस (चक्कर आना, उल्टियां होना आदि) से निजात दिलाता है। **दर्द मिटाए चुटकी में**-अदरक दर्द भगाने की सबसे कारगर दवा है। 'फूड्स दैट फाइट पेन' पुस्तक के लेखक आर्थर नील बर्नार्ड के मुताबिक अदरक में दर्द मिटाने के प्राकृतिक गुण पाए जाते हैं। यह बिना किसी दुष्प्रभाव के दर्दनिवारक दवा की तरह काम करता है।

इसलिए भी खास है अदरक-पाचन की समस्या होने पर रोजाना सुबह अदरक का एक टुकड़ा खाएं। ऐसा करने से आपको बदहजमी नहीं होगी। इसके अलावा सीने की जलन दूर करने में भी अदरक मददगार साबित होता है।

अदरक में किसी भी चीज को संरक्षित करने के गुण प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं। शोध के मुताबिक अदरक का सत्व सल्मोनेला नामक जीवाणुओं को खत्म करने में काफी असरकारक है। शरीर में वसा का स्तर कम करने में भी अदरक काफी मददगार है। यदि आपको खांसी के साथ कफ की भी शिकायत है तो रात को सोते समय दूध में अदरक डालकर उबालकर पिएं। यह प्रक्रिया करीब 15 दिनों तक अपनाएं। इससे सीने में जमा कफ आसानी से बाहर निकल आएगा।

गुणकारी सौंफ

- 10 ग्राम सौंफ के तैल में 250 ग्राम गरम दूध मिलाकर पिलाने से पागलपन में लाभ होता है।
- 200 ग्राम पानी में 10 ग्राम महीन सौंफ पीसकर छानकर तैयार करें। इसमें 10 ग्राम मिश्री मिलाकर दोनों समय रोगी को पिलाने से गरमी से उत्पन्न पागलपन दूर हो जाता है।
- 400 ग्राम पानी में 10 ग्राम सौंफ पीसकर आग पर रख दीजिए। जब पकते-पकते पानी 100 ग्राम रह जाये तब छानकर खांड मिलाकर प्रातः-सायं पिलाने से नजला व जुकाम में लाभ होता है।

कुछ घरेलू टिप्स

- लहसुन के छिलके को हल्का-सा गरम करने से वे आसानी से उतर जाते हैं।
- हरी मिर्च के डंठल को तोड़कर मिर्च को अगर फ्रिज में रखा जाये तो मिर्च जल्दी खराब नहीं होती।
- हरी मटर को अधिक समय तक ताजा रखने के लिए प्लास्टिक की थैली में डालकर फ्रिज में रख दो।
- चावल बनाते समय एक टीस्पून तेल और कुछ बूंदें नींबू के रस की मिलाने से वह पकने के बाद खिला-खिला रहेगा।
- पपीते में थोड़ा पानी डालें उसके बाद दूध उबालें। इससे बर्तन की तली में दूध चिपकेगा नहीं।

हरियाणा सोसायटी एक्ट-2012 के अनुसार **आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा** दयानन्दमठ रोहतक के **त्रिवार्षिक चुनाव** के लिए पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों के चुनाव सम्बन्धी

निर्धारित समय-सारणी

क्र०	विषय	दिनांक	समय
1.	नामांकन पत्र भरना नामांकन फीस 1000/- रु० स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक	23.11.16	प्रातः 10 से 1 बजे तक
2.	नामांकन पत्रों की जांच	25.11.16	प्रातः 9 से 4 बजे तक
3.	चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों की सूची जारी करना	26.11.16	सायं 4 बजे तक
4.	नामांकन पत्र वापिसी	28.11.16	प्रातः 10 से 4 बजे तक
5.	चुनाव लड़ने वाले सदस्यों की अन्तिम सूची	29.11.16	सायं 4.30 बजे तक
6.	चुनाव-चिह्न आवंटित करना	30.11.16	प्रातः 9 से 3 बजे तक
7.	चुनाव-प्रचार समाप्त	09.12.16	सायं 4 बजे
8.	साधारण सभा बैठक	11.12.16	प्रातः 9 से 10.30 बजे तक
9.	पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव स्थान : सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक	11.12.16	प्रातः 11 से 4 बजे तक
10.	वोटों की गिनती तथा परिणाम की घोषणा	11.12.16	वोटिंग के तुरन्त बाद
11.	विजयी उम्मीदवारों की सूची	11.12.16	परिणाम के तत्पश्चात्
12.	विजयी उम्मीदवारों को प्रमाण-पत्र	11.12.16	उम्मीदवारों की सूची जारी करने के पश्चात्

नोट-1. नामांकन फार्म की जमा की गई राशि 1000/- रु० वापिस नहीं होगी।
2. चुनाव लड़ने वाले इच्छुक उम्मीदवारों को साधारण सभा के सदस्यों (प्रतिनिधियों) में से एक सदस्य द्वारा फार्म को सत्यापित करवाना आवश्यक होगा।
3. साधारण सभा की बैठक सभा कार्यालय परिसर दयानन्दमठ रोहतक में होगी।
4. चुनाव के लिए सभा द्वारा जारी किये गए पहचान-पत्र अवश्य साथ लायें। जो पहचान-पत्र लाएगा उसी का मतदान डलवाया जाएगा।
5. यदि किसी मतदाता को पहचान-पत्र नहीं मिला या गुम हो गया है उस सूरत में उसके पास मूलरूप में चुनाव आयुक्त (भारत) से जारी पहचान-पत्र, डाइविंग लाइसेंस या राशनकार्ड, इनमें से कोई एक साथ लायें।
6. प्रतिनिधियों की सूची (वोटर लिस्ट) सभा की वैबसाईट **www.apsharyana.org** पर देख सकते हैं।

(डॉ० सुरेन्द्र कुमार)
चुनाव अधिकारी
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्दमठ, रोहतक

www.thearyasamaj.org

माँ

लेती नहीं दवाई 'माँ', जोड़े पाई-पाई 'माँ'।
दु:ख थे पर्वत, राई 'माँ', हारी नहीं लड़ाई 'माँ'।
इस दुनिया में सब मैले हैं, किस दुनिया से आई 'माँ'।
दुनिया के सब रिश्ते ठण्डे, गरमागरम रजाई 'माँ'।
जब भी कोई रिश्ता उधड़े, करती है तुरपाई 'माँ'।
बाबू जी तनखाह लाये बस, लेकिन बरकत लाई 'माँ'।
बाबू जी थे सख्त मगर, माखन और मलाई 'माँ'।
बाबू जी के पांव दबाकर सब तीरथ हो आई 'माँ'।
नाम सभी हैं गुड़ से मीठे, माँ जी, मैया, माई, 'माँ'।
सभी साड़ियां छीज गई थी, मगर नहीं कह पाई 'माँ'।
घर में चूल्हे मत बांटो रे, देती रही दुहाई 'माँ'।
बाबू जी बीमार पड़े जब, साथ-साथ मुरझाई 'माँ'।
रोती है लेकिन छुप-छुपकर, बड़े सब्र की जाई 'माँ'।
लड़ते-लड़ते, सहते-सहते, रह गई एक तिहाई 'माँ'।
बेटी रहे ससुराल में खुश, सब जेवर दे आई 'माँ'।
'माँ' से घर, घर लगता है, घर में घुली, समाई 'माँ'।
बेटे की कुर्सी है ऊँची, पर उसकी ऊँचाई 'माँ'।
दर्द बड़ा हो या छोटा हो, याद हमेशा आई 'माँ'।
घर के शगुन सभी माँ से, है घर की शहनाई 'माँ'।
सभी पराये हो जाते हैं, होती नहीं पराई 'माँ'।

संकलन—**नवीन आर्य,** आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

जैसा अन्न वैसा मन

लंगर के क्षेत्रों में अन्न का क्या प्रभाव होता है जो लंगर यज्ञ निमित्त चलाये जाते हैं, उनमें देने वालों की श्रद्धा सात्त्विक होती है, वहां पुण्य-पुण्य होता है। जहां किसी महापुरुष की वर्षी के निमित्त लंगर होता है वहां देने वालों की वृत्ति गरीबों की श्रद्धा से और अर्गारों की यश भाव से। वहां के सन्तों, साधुओं या कर्मचारियों को प्रसन्न करने के लिए राजसिक होती है और क्षेत्रों में जो स्थायी चलते हैं उनमें लोग अपने पाप से कमाये धन से पाप को हल्का करने के लिए मृतक के निमित्त दान भेजते हैं और देते हैं। उसका असर खाने वालों पर अन्त:करण की अशुद्धि व आवरण ही रहता है।

एक साधु या गुरु किसी का एक का खाता है या अनेक के भी इस भाव से उसने उपदेश दिया था कि पाप से नहीं बच सकता। कारण उसने उपदेश एक बार दिया और अन्न बार-बार खाया।

(साभार-यज्ञ-योग-ज्योति)

यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न

दिनांक 10 अक्तूबर 2016 को आर्यसमाज सिहोर जिला महेन्द्रगढ़ द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में संस्कार मर्मज्ञ आचार्य वेदमित्र जी रोहतक द्वारा संस्कार किया गया। आचार्य जी ने कहा कि माँ जैसे बालक को जन्म देती है, ऐसे ही गुरु उस बालक को द्विज बना देता है। उसके जन्म-जन्म के कुसंस्कारों को आचार्य विद्या से निर्मल कर देता है'।

श्री राजवीर जी के पुत्र आदित्य व पुत्री अदिति के साथ-साथ अनेक बालकों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। बालकों ने एक दिन का व्रत भी रखा। वेदोपदेश करते हुए आचार्य जी ने कहा कि राजा लोग भी अपने पुत्रों का यह यज्ञोपवीत संस्कार करवाते थे। तब राम, कृष्ण जैसे मर्मज्ञ विद्वान् राजा बने। आज भी उस परम्परा को चलाने वाले बालकों को संस्कारित कर सकते हैं।

'आर्य प्रतिनिधि' साप्ताहिक की सदस्यता ग्रहण कर तथा धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' को सहयोग राशि भेजकर वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनिये।
सम्पर्क—01262-216222, मो० 08901387993

भजन (तर्ज-देशी)

टेक-मेरी अक्कल हुई थी खराब नादानी मेंऽऽऽ।
मतना पिओ शराब जिन्दगानी मेंऽऽऽ॥

1. पहलम-पहलम महफिलों में सिखे पिणा-खाणा रे।
मुफ्त की दारू मिली पिण नै मस्ती-मौज उड़ाणा रे।
अण्डे-मुर्गे-मांस खाये, पाप तै ना घबराणा रे।
बण कै चला नवाब गुमानी में। मतना पिओ शराब... ॥

2. शराब नशे में गाली दे दी, दोस्तों से झगड़ा होग्या रे।
यारी में गद्दारी होगी, बीज विघ्न के बोग्या रे।
आदत से लाचार शराबी और ठिकाणा दोहग्या रे।
करै खाट में रोज पेशाब पजामी में। मतना पिओ शराब... ॥

3. प्याज गेल्यां दारू पीकै होटल में रोट्टी खाई रे।
होटल आला न्यूं सोचै शराबियां तै करूं कमाई रे।
गौह-कै-गौह लडरी थी यें दोनूं जहरण पाई रे।
पाया गलत हिसाब बेईमानी में। मतना पिओ शराब... ॥

4. मामा-भानजा-सुसरा-जमाई गेल्यां पीवे साला रे।
नेग जोग और शर्म त्याग दी क्यूंकर पाटै पाला रे।
गोती नाती दूर हुए कोन्या होश सम्भाला रे।
देंगे सब जवाब जुबानी में। मतना पिओ शराब... ॥

5. बालक बच्चे ब्याही तैं भी रहण लागग्या न्यारा रे।
खेती-बाड़ी नौकरी छोड़ी, छोड़ा सब रोजगारा रे।
बिना कमाई कोन्या पाई, नहीं सै यारा-प्यारा रे।
टोटे में खत्म ख्वाब परेशानी में। मतना पिओ शराब... ॥

6. पढ़े-लिखे रोजाना पीवैं, घर में पिट्टै बीवी रे।
डाक्टर ने भी नब्ज मिली ना, काढ दिखाओ जीभी रे।
करें एक्स-रे खत्म फेफड़े, शरीर में पाई टी.बी. रे।
रुकता नहीं जुलाब मशानी में। मतना पिओ शराब... ॥

7. शराबियों की संगत में आच्छे-आच्छे भी गहगे रे।
सकल जमाना देखो घूम के, अच्छे थोड़े रहगे रे।
बणे नकली यार दारू से प्यार, पाप नाव में बहगे रे।
कती उतरगी आब, हैवानी में। मतना पिओ शराब... ॥

8. इस दारू की आदत ने बहुत घणे घर खोए सैं।
बुद्धिमान् बलशाली मारे, पाए कोन्या टोहे सैं।
गफलत के में संभले कोन्या, काट लिए जिसे बोए सैं।
लगी ठोकर कस कै दाब ठिकनी में। मतना पिओ शराब... ॥

9. लुट-पिट कै न घरां बैठग्या ईब होश ठिकाणे आए सैं।
यारी नै बरबाद किया, यार टोहे ना पाए सैं।
ऋषि दयानन्द सरस्वती के बोल याद फेर आए सैं।
पढ़ूं सत्यार्थप्रकाश किताब बणूं ज्ञानी में। मतना पिओ शराब... ॥

10. **सुनहरा सिंह नरवाल** कहै खुशहाल करो परिवार नै।
दूध-दही-घी-मक्खन खाओ, छोड़ो चाट अचार नै।
खेत कमाओ नौकर जाओ, लाओ लौ रोजगार नै।
फेर कंगाली का उतार नकाब जवानी में। मतना पिओ शराब... ॥

—सुनहरा सिंह नरवाल रिटायर्ड सब-इंस्पेक्टर, नरवाल हाउस ,
'ओमेक्स सिटी' दिल्ली रोड रोहतक। मो० 09416357176

सूचना

दर्शन योग महाविद्यालय महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया सुन्दरपुर रोहतक का वार्षिकोत्सव 10 नवम्बर 2016 (गुरुवार) को मध्याह्न 9 बजे से 12 बजे तक बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी, स्वामी आशुतोष जी आदि विद्वान् उपस्थित रहेंगे। आपसे प्रार्थना है कि इस अवसर पर पहुंचकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

—निगम मुनि, व्यवस्थापक, दर्शन योग महाविद्यालय, सुन्दरपुर रोहतक

www.thearyasamaj.org

किसके अभाव में क्या व्यर्थ है?

(1) गुण न हो तो रूप व्यर्थ है। (2) विनम्रता न हो तो विद्या व्यर्थ है। (3) सत्य उपयोग न हो तो धन व्यर्थ है। (4) साहस न हो तो हथियार व्यर्थ है। (5) भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है। (6) होश न हो तो जोश व्यर्थ है। (7) परोपकार न हो तो जीवन व्यर्थ है।

एक सौगात मन की करामात

(1) प्रेरणा कहां से पाता है ये मन। (2) कहाँ-कहां ले जाता है ये मन। (3) रात-दिन हमें नचाता है ये मन। (4) अपने जाल में फंसाता है ये मन। (5) आलसी हमको बनाता है ये मन। (6) इधर-उधर हमें उलझाता है ये मन। (7) अपने तर्क दे समझाता है ये मन। (8) रुलाता है कभी हंसाता है ये मन। (9) कई तरह के चक्कर चलाता है ये मन। (10) पाप के लिए हमें उकसाता है ये मन। (11) हसीन सपनों के नजारे दिखाता है ये मन। (12) बहाने बहुत ही बनाता है ये मन। (13) सदा अपनी ही सुनाता है ये मन। (14) सुनहरे बाग-बगीचे दिखाता है ये मन। (15) आजाद को रोज भटकाता है ये मन।

क्रोध?

(1) क्रोध न कर क्रोध बहुत बलवान है। (2) होश छीन लेता, करता बहुत नुकसान है। (3) इंसा को बना देता, यह हैवान है। (4) क्रोध की अग्नि पहले खुद को जलाती है, दूसरे को फिर शिकार अपना बनाती है। (5) जिस-जिस पर यह सवार हुआ, उस-उस का जीना दुश्वार हुआ। (6) सिर पर सवार जब यह जुनून होता है, पानी की एक बाल्टी पर खून होता है। (7) इसके क्रूर पंजे में जो भी आ गया, इंसानियत के नीचे वह गिर गया।

भेंटकर्त्ता : भलेराम आर्य, ग्राम सांघी जिला रोहतक 9416972879

वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित साधना स्थली

वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक-124001 फोन 01262-253214

यजुर्वेद एवं सामवेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ

इस शुभ अवसर पर आप सब सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

यज्ञ ब्रह्मा—आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय जी

आमन्त्रित विद्वान्—स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक, डॉ० वागीश जी आचार्य, आचार्य उमेशचन्द कुलश्रेष्ठ वैदिक प्रवक्ता आगरा, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल पूठ।

वेदपाठ-आर्ष गुरुकुल एटा के ब्रह्मचारियों द्वारा

भजनोपदेशक : श्री ओममुनि, पं० सत्यपाल 'पथिक'

शुक्रवार 4 नवम्बर 2016

यज्ञ प्रारम्भ : 3 से 6 बजे सायंकाल

शुक्रवार 4 नवम्बर 2016 से सोमवार 14 नवम्बर 2016 तक

योग साधना प्रात: 5.15 से 6.15 तक सायं 6.15 से 7.00 बजे तक

द्वारा—स्वामी आशुतोष परिव्राजक

प्रात: 6 से 9 बजे तक यज्ञ, भजन, उपदेश

सायं 3 से 6 बजे तक यज्ञ, भजन, उपदेश

गुरुकुल कुटिया मेला : रविवार, 13 नवम्बर, 2016 प्रात: 10 बजे से

गायत्री यज्ञ शनिवार 12 नवम्बर 2016 प्रात: 10.30 से 12.30 बजे तक

रविवार, 13 नवम्बर 2016 भजन-सन्ध्या सायं 8 बजे से 10 बजे तक

श्री दिनेश पथिक, श्री सत्यपाल पथिक, श्री पवनजीत आर्य जी द्वारा

पूर्णाहुति तथा आशीर्वाद सोमवार, 14 नवम्बर, 2016

यज्ञ, भजन, उपदेश प्रात: 7 बजे से दोपहर 1 बजे तक तत्पश्चात् ऋषिलंगर

विशेष—आवास तथा भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगी। यजमान बनने के इच्छुक पुण्यार्थी भक्तजनों के लिए सम्पर्क सूत्र। समय परिवर्तन का अधिकार यज्ञ ब्रह्मा जी एवं प्रधान को होगा।

—वेदप्रकाश आर्य, मन्त्री, वैदिक भक्ति साधन आश्रम, आर्यनगर, रोहतक

वेदप्रचार मण्डल हिसार के बढ़ते कदम

वेदप्रचार मण्डल हिसार ने यज्ञों के माध्यम से धुआंधार वेदप्रचार किया। गांव धानसो ने मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा यज्ञ किया गया। हिसार सैक्टर-14 में अपने घर पर हवन किया। आर्य निवास नलवा में दीपावली पर्व पर मण्डल के संरक्षक वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया।

मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी द्वारा बरवाला में सैनी धर्मशाला की नींव रखने पर हवन किया गया। चौ० हरिसिंह सैनी मुख्य अतिथि थे। दीपावली पर ग्राम बलियावाला (फतेहाबाद) में श्री सूबेसिंह आर्य के घर पर पारिवारिक यज्ञ डॉ० प्रमोद व स्नेही जी द्वारा किया गया। मण्डल संरक्षक चौ० युद्धवीर सिंह के मकान पर विद्यालय के अध्यापक अमित शास्त्री द्वारा यज्ञ किया गया। युद्धवीर सिंह की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में दीपावली पर्व पर यज्ञ किया गया। प्रेस फोटोग्राफर हिसार में कार्यक्रम के उद्घाटन पर वरिष्ठ पत्रकार देवेन्द्र उप्पल के अध्यक्षता में डॉ० प्रमोद द्वारा यज्ञ किया गया।

उपरोक्त कार्यक्रमों में मण्डल के अधिकारियों ने यज्ञ के लाभ, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी व महर्षि दयानन्द जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। यज्ञ का वैज्ञानिक स्वरूप दीपावली पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उपस्थित नर-नारियों को सन्ध्या-हवन को अपने जीवन से जोड़ने का अनुरोध किया। इसलिये अगर हम वेदप्रचार मण्डल हिसार के बढ़ते कदम कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री,
वेदप्रचार मण्डल हिसार

आत्मिक शांति के लिये शुद्धता से करें आह्वान
प्रसन्न हो आशीर्वाद देंगे भगवान

शुद्ध एम डी एच हवन सामग्री

शुभ दिनों, शुभ कार्यों एवं पावन पर्वों में शुद्ध घी के साथ, शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित एम डी एच हवन सामग्री का प्रयोग कीजिये। शुद्धता में ही पवित्रता है। जहां पवित्रता है वहां भगवान का वास है, जो एम डी एच हवन सामग्री के प्रयोग से सहज ही उपलब्ध है।

अलौकिक सुगंधित अगरबत्तियां

महाशियां दी हट्टी लि०
एम डी एच हाउस, 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-15 फोन : 5937987, 5937341, 5939609
शाखाएं : • दिल्ली • गाजियाबाद • गुड़गांव • कानपुर • कलकत्ता • नागौर • अमृतसर

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

www.thearyasamaj.org

आर्यो दीपावली पर्व पर अपना आत्म-निरीक्षण करो

दीपावली पर्व तो हम सब आर्यो के लिए विशेष महत्त्व का पर्व है। क्योंकि इस पर्व का सम्बन्ध मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी का अयोध्या आगमन तथा युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण (बलिदान) दिवस से है।

अत: हम इन महापुरुषों के जीवन, कार्य, कर्त्तव्य तथा आदेशों को शिरोधार्य मानकर मिल-बैठकर मनों में प्रेम की ज्योति जलायें। उपरोक्त महापुरुषों के बताये मार्ग पर चलकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का दृढ़ संकल्प ले, वरना ऐसी दीपावली मनाने का कोई लाभ नहीं। राम और भरत ने राज की गेंद बनाकर ठुकराई आजकल के तथाकथित आर्यसमाजों पर व संस्थाओं पर कब्जा करने पर जुटे हुए हैं। महर्षि दयानन्द की बात व वेदमार्ग पर चलकर आर्यसमाज के संगठन को मजबूत बनायें।

मेरा यह भी दृढ़ विश्वास व मान्यता है कि आर्यसमाज ही देश को बचा सकता है तथा वेदमार्ग पर चलकर ही देश प्रगति व शान्ति प्राप्त कर सकता है। बशर्ते कि आर्यसमाज के विद्वान्, संन्यासी तथा आर्यनेता महर्षि दयानन्द की बात मानकर त्याग, तप का जीवन जीएं, आपस में मिल-बैठकर सब कार्य करें। आश्रम वर्णव्यवस्था का पालन करें, तीनों सभाओं विद्या आर्यसभा, धर्म आर्य सभा, राज आर्यसभा का विधिवत् गठन कर क्रियात्मक रूप दें। संन्यासी वर्ग तीनों ऐषणाओं-पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा से कोसों दूर रहें। सन्ध्या, हवन तथा गुरुकुलों में एकरूपता हो, आर्यसमाजों तथा सभाओं के चुनाव सर्वसम्मति से हों। प्रत्येक आर्य अपने जीवन को सन्ध्या-हवन, स्वाध्याय तथा अनुशासन से जोड़े। प्रत्येक आर्य इस पर्व पर अपना आत्म-निरीक्षण करके संगठित होकर शराब, गोहत्या, धार्मिक पाखण्ड, अश्लीलता, दहेज, भ्रूणहत्या, चरित्रहीनता आदि के खिलाफ युद्धस्तर पर जनजागरण अभियान चलाए तभी आर्यसमाज का कार्य बढ़ेगा तथा महर्षि दयानन्द का स्वप्न पूरा होगा।

आर्यजन अपने घर में एक गौ अवश्य पालें तथा गऊओं की नस्ल सुधारी जाये। साधु, संन्यासी, महात्मा गऊ का दूध पीने का व्रत लें। अब तो मूल को सींचने की जरूरत है, पत्तों को पानी देने से बात नहीं बनेगी। अब तो पानी सिर से ऊपर जा चुका है। कहने की नहीं, अब कुछ करने की जरूरत है। प्रत्येक आर्य का जीवन बोलना चाहिए। भ्रष्ट राजनेताओं की डूम बड़ाई करने तथा पिछलग्गू बनने की जरूरत नहीं है। हमें सत्य बोलना चाहिए।

मेरा दीपावली पर्व के अवसर पर आर्यसमाज के विद्वानों, संन्यासियों तथा आर्यनेताओं से करबद्ध प्रार्थना है कि आपस में लड़ाई-झगड़े, मुकदमे खत्म कर तथा नवयुवकों को आर्यसमाज से जोड़कर आर्यसमाज को मजबूत बनाएं। वरना पश्चात्ताप व रोने-धोने के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगेगा। आने वाली पीढ़िया हमें धिक्कारेगी। दीपावली पर्व हम सबके लिए मंगलमय व प्रेरणादायक हो। भगवान् हम सब आर्यों को सद्बुद्धि दे।

—वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही,
नलवा हिसार 9466865351

आर्यसमाज के उत्सवों का कार्यक्रम सम्पन्न

आर्यसमाज मॉडल टाउन हिसार का वार्षिक उत्सव व वेदकथा 19 अक्तूबर से 23 अक्तूबर 2016 तक विधिवत् सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी थे। प्रतिदिन शहर के प्रतिष्ठित दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया। प्रधान जगदीश प्रसाद गुरेरा ने ध्वजारोहरण किया।

आचार्य सोमदेव शास्त्री अजमेर ने वेदमन्त्रों की सरल शब्दों में व्याख्या की। पं० नरदेव आर्य पलवल के शिक्षाप्रद भजन हुए। मंच पर स्वामी सर्वदानन्द जी, आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री, वानप्रस्थ महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, पं० रामजीलाल पूर्व सांसद, चौ० हरिसिंह सैनी आदि उपस्थित थे। पुरोहित सूर्यदेव शास्त्री व श्रीमती कल्याणी देवी के भजन हुए।

आर्यसमाज फतेहाबाद का वार्षिक उत्सव 22, 23 अक्तूबर 2016 को सम्पन्न हुआ। पुरोहित पं० सतीश शास्त्री ने यज्ञ करवाया। स्वामी अखिलेश्वरानन्द उत्तर प्रदेश के प्रेरणादायक व्याख्यान हुए। बहन अंजलि के शिक्षाप्रद भजन हुए। मंच पर सत्यपाल बंसल, वानप्रस्थ महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, युद्धवीर सिंह आर्य, प्रधान बंसीलाल आर्य उपस्थित थे। श्री डॉ० राजवीर ने मंच का संचालन किया।

आर्यसमाज हांसी में वेदकथा व वार्षिक उत्सव 19 से 23 अक्तूबर 2016 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। वेदप्रकाश श्रोत्रीय ने प्रेरणादायक वेदकथा की व यज्ञ के ब्रह्मा भी थे। श्री रामकुमार आर्य (टोकस) व संदीप आर्य पानीपत के समाज सुधार के भजन हुए। किशनचन्द बब्बर प्रधान ने सबका स्वागत किया। जोशी कुमार पुरोहित ने मंच संचालन किया। हरिसिंह सैनी ने भी अपने विचार रखे। विद्यालय की छात्राओं ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का सुन्दर प्रेरणादायक नाटक प्रस्तुत किया। चौ० हरिसिंह सैनी ने ओ३म् का ध्वजारोहरण किया और दयानन्द भवन का शिलान्यास किया। 1 लाख 50 हजार रुपये नागोरी गेट आर्यसमाज की ओर से व 51,000 रुपये अपनी ओर से भवन के लिए दान दिया। मंच पर महात्मा अत्तरसिंह स्नेही आदि उपस्थित थे। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के 12 विद्यार्थियों ने यज्ञ, भोजन व सेवा का कार्यक्रम ठीक प्रकार से संभाला।

—मा० दिलबाग सिंह आर्य, उपमंत्री
वेदप्रचार मण्डल हिसार

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —संपादक

आचार्य अर्जुनदेव जी वर्णी दिवंगत

आर्यजगत् के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, विनम्रता एवं सरलता की प्रतिमूर्ति, आर्ष संस्कृति के पोषक, मन-वचन-कर्म से सच्चे प्रहरी एवं निष्ठावान् दयानन्दी, पूरे देश में वैदिक धर्म की अलख जगाने वाले, समर्पित व्यक्तित्व, योग कला में प्रवीण, दर्शनों के ज्ञाता, वैदिक धर्म के आस्थावान् प्रवक्ता आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी का हृदयगति रुकने से 70 वर्ष की आयु में 22.10.2016 को प्रात:काल 5 बजे निधन हो गया। आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी आचार्य बलदेव जी के गुरुकुल कालवा में प्रथम शिष्य स्नातक एवं आचार्य बलदेव जी के प्रथम मानस पुत्र के रूप में जाने जाते थे। उनका दाह संस्कार गुरुग्राम में पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य सत्यजीत जी (अजमेर), आचार्य भद्रकाम वर्णी, आचार्य सत्यव्रत जी, आचार्य सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम्, आचार्य शतक्रतु जी, श्री कन्हैयालाल आर्य के द्वारा वेदमंत्रों से हुआ। उनका जाना आर्यजगत् की एक बहुत बड़ी अपूरणीय क्षति है। अभी आर्यजगत् डॉ० धर्मवीर जी के निधन से अपने आपको उबार नहीं पाया था, यह दूसरा वज्राघात आर्यजगत् को झकझोर गया। अन्त्येष्टि में श्री रामपाल आर्य मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उपस्थित हुए।

आचार्य अर्जुनदेव वर्णी जी की श्रद्धांजलि सभा 25.10.2016 को वैदिक कन्या उच्च विद्यालय जैकमपुरा में विद्यालय के प्रधान चन्द्रप्रकाश गुप्ता जी के सौजन्य से सम्पन्न हुई। इस श्रद्धांजलि सभा में आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य अखिलेश्वर जी, आचार्य आर्यनरेश जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, आचार्य नन्दकिशोर जी, आचार्य सत्येन्द्र प्रकाश सत्यम्, श्री सज्जनसिंह आर्य, आचार्य रामवीर जी, आचार्य सर्वमित्र आर्य, श्री सत्यदेव शास्त्री, आचार्य शतक्रतु जी, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री रविकान्त राणा, आर्य अतुलानन्द बीकानेर, आचार्य चन्द्रदेव जी, आचार्य अरविन्द शास्त्री, श्री लक्ष्मण पाहूजा, श्री चन्द्रप्रकाश गुप्ता, प्रभुदयाल चुटानी, धर्मेन्द्र बजाज, श्री किशनचन्द सैनी, श्री वेदभानु आर्य, श्री रामअवतार गोयल, श्री पदमचन्द आर्य, श्री ईश्वर दहिया सहित हजारों लोगों ने भाग लिया। मंच का संचालन श्री कन्हैयालाल आर्य ने किया। इस आश्रम के उत्तराधिकारी के रूप में श्री विवस्वान जी को कार्यभार सौंपा गया।

—कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

www.thearyasamaj.org

सत्य हेतु अतिवादी दयानन्द

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

विद्यालय में एक बालिका ने 'दीपावली' में अपने चन्द मिनट के भाषण में उल्लेख किया कि इस दिन श्रीराम 14 वर्ष का वनवास समाप्त करके अयोध्या लौटे थे, आदि। उसके बाद जब मेरे उद्बोधन का समय आया तो मैंने कहा कि आप यह तो कहेंगे कि आर्यसमाजी हर बात का खंडन करते हैं, लेकिन जो भी बात बुद्धि, तर्क, सृष्टि नियम विरुद्ध होती है, हम उसी का खण्डन करते हैं। यह खण्डन उन्नति, समृद्धि, सुख के लिए आवश्यक भी है। राम इस दिन अयोध्या आए यह कोरी गप्प है। हम यहाँ इस तथ्य के विस्तार में नहीं जाते। ऋषि दयानन्द ने 'रामलीला' जो 'रासलीला' कहा वह आज भी प्रत्यक्ष सिद्ध हो रहा है। डी.जे. पर फिल्मी गानों पर 'रामलीला' में मञ्च पर नृत्य हो रहे हैं। महापुरुषों का स्वांग रचना ऋषि के अनुसार बिल्कुल अच्छी बात नहीं। इस संदर्भ में आर्यसमाज के धुरंधर भजनोपदेशक पं० रामनिवास आर्य (पानीपत) प्रायः यह रोचक प्रसंग सुनाते हैं कि मंच पर अपनी संवाद अदायगी के पश्चात् 'सीता' बना व्यक्ति 'रावण' से बीड़ी मांगकर पी रहा है? कुप्रथा के नाम पर आतिशबाजी से होने वाले प्रदूषण का अनुमान लगाइये। एक और बात जहां 'लीला' शब्द आ गया वहां सत्य इतिहास पर तो हमने स्वयं प्रश्नचिह्न लगा दिया, 'लीला' शब्द जीवन की सच्चाई व पुरुषार्थ से बिल्कुल विपरीत है।

अन्धविश्वास यही तो करता है—वह हमें सत्य और पुरुषार्थ से दूर ले जाता है। धन्य दयानन्द! आपका सत्यार्थप्रकाश हमें अन्धकार में खोने से बचाता है। हे ऋषि! सत्य हेतु आप अतिवादी थे। आप 'छान्दोग्य' उपनिषद् में वर्णित 'नाम', 'वाणी', 'मन', 'संकल्प', 'चित्त', 'ध्यान', 'विज्ञान', 'बल', 'अन्न', 'जल', 'तेज', 'आकाश', 'स्मृति', 'आशा', 'प्राण' इस सबको जानने वाले 'आत्मवित्' थे। ऐसा व्यक्ति सत्य हेतु 'अतिवादी' हो जाता है। 'उपनिषद्' भी उसके इस 'अतिवाद' की पुष्टि करता है। 'उपनिषद्' के अनुसार यदि कोई ऐसे 'मनुष्य' को बकवादी कहे तो उसे ऐसा कहने वाले को यह उत्तर देना चाहिए—"मैं सत्य को प्राप्त करने के लिए आगे ही आगे बढ़ना चाहता हूँ, इस हेतु अतिवादी हूँ।" अतः हमारे स्वामी को 'कोलाहल स्वामी' कहने वाले अज्ञानी थे, उपनिषद् ज्ञान से अनभिज्ञ थे। हमारे स्वामी तो सत्य हेतु 'अतिवादी' स्वामी थे। अन्वेषणकाल में शव तक की चीर-फाड़ द्वारा परीक्षा, जंगल, कंदराओं, हिमाच्छादित पर्वतों की यात्रा, फिर विद्या का आत्मसात् व ईश्वर साक्षात्कार, उनके लिए यही बस नहीं था। सत्य हेतु अतिवादी होकर ही 'भूमा' को प्राप्त किया जा सकता है। यही तो उपनिषद् का संदेश है। 'भूमा' जो सुख है, असीम है, उसके लिए हम अपने सत्य के आग्रह को ससीम कैसे बना सकते हैं? अतः अन्तिम समय तक 'भूमा' के लिए दयानन्द की यात्रा सही दिशा में रही। लेकिन हमें तो स्वार्थ, अविद्या, अज्ञान के अवरोधक बार-बार इस यात्रा में गिरा देते हैं। आओ! ऋषि के सच्चे सिपाही बनने का संकल्प लेवें।

निशानेबाजी में गुरुकुल बना 'चैम्पियन ऑफ चैम्पियन्स'

कुरुक्षेत्र, 27 अक्टूबर 2016 : गुरुकुल कुरुक्षेत्र निशानेबाजी में चैम्पियन ऑफ चैम्पियन्स बन गया है। अंबाला में हुई प्रथम एच.एस ऑपन शूटिंग चैम्पियनशिप में गुरुकुल के छात्र नवलजीत आर्य ने यह खिताब अपने नाम कर गुरुकुल की ख्याति में चार-चाँद लगा दिये। यह जानकारी देते हुए गुरुकुल के शूटिंग कोच बलबीर सिंह ने बताया कि थर्ड आई शूटिंग स्पोर्टस एकेडमी, अंबाला द्वारा 22 से 26 अक्तूबर तक इस टूर्नामेंट का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न आयुवर्ग के लगभग 150 निशानेबाजों ने भाग लिया। इस टूर्नामेंट में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के छात्र शिवांश आर्य व नवलजीत आर्य ने रजत पदक तथा तरुण परमजीत ने कांस्य पदक प्राप्त किया। वहीं नवलजीत आर्य ने पूरी टूर्नामेंट में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 'चैम्पियन ऑफ चैम्पियन्स' ट्रॉफी गुरुकुल के नाम की। आयोजकों की ओर से नवलजीत आर्य को 7100 रुपये और ट्रॉफी देकर पुरस्कृत किया गया। गुरुकुल के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी एवं सह-प्राचार्य शमशेर सिंह ने सभी निशानेबाजों को मिठाई खिलाकर बधाई व आशीर्वाद दिया और भविष्य में भी इसी प्रकार का उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

वेदप्रचार मण्डल हिसार की महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में महात्मा आनन्द स्वामी सभागार में 14.10.16 को प्रधान श्री रामकुमार आर्य की अध्यक्षता में महत्त्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान आचार्य विजयपाल, मन्त्री मा० रामपाल आर्य ने 22 अक्तूबर 2016 को कुरुक्षेत्र आर्य युवा महासम्मेलन में पधारने का निमंत्रण दिया। स्नेही जी के प्रयास से निम्न आर्यजन मीटिंग में पहुंचे। जिनमें, रामकुमार आर्य, सूबेसिंह आर्य, हरिसिंह आर्य, महावीर आर्य, ब्र० दीपकुमार आर्य, मानसिंह जी पाठक, सत्यप्रकाश मित्तल, किशनलाल आर्य, प्रमोद आर्य, प्रताप आर्य, महेन्द्रसिंह मलिक, महेन्द्र योगी, ईश्वरसिंह आर्य, युद्धवीरसिंह आर्य, महात्मा अत्तरसिंह स्नेही, नरेन्द्र आर्य आदि उपस्थित थे। कई लोगों ने अपने सुझाव रखे तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र आर्य युवा महासम्मेलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आश्वासन दिया। आर्यों ने संगठित होकर वेदप्रचार को गति देने का आग्रह किया।

—अमित शास्त्री, हिसार

साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ-योग तथा वेदप्रचार सम्पन्न

हिसार। आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में 16.10.2016 को साप्ताहिक सत्संग में यज्ञ-योग तथा वेदप्रचार का कार्यक्रम विधिवत् सम्पन्न हुआ। अजमेरशार्य द्वारा यज्ञ किया गया। महेन्द्रसिंह मलिक ने यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। दीपक आर्य व विद्यालय के छात्रों ने ईश्वर भक्ति के भजन गाए।

सभा प्रधान धर्मपाल शास्त्री ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने मंच का संचालन करते हुए कहा कि आसन व प्राणायाम का करना ही योग मानते हैं जो गलत है। हमें पहले पांच यम और पांच नियमों का पालन करना चाहिए। हम आर्यों को संगठित होकर वेदप्रचार को गति देनी चाहिए। इस कार्यक्रम में शहर व गांव के नर-नारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। वेदप्रचार मण्डल के सदस्यों ने भी बढ़ चढ़कर भाग लिया।

—रामकुमार आर्य प्रधान
वेदप्रचार मण्डल (हिसार)

सूचना

सभी प्रतिनिधियों को सूचित किया जाता है कि सभा के त्रिवार्षिक चुनाव दिनांक 11 दिसम्बर 2016 के लिए सभी प्रतिनिधियों (वोटरों) के पहचान-पत्र बनकर तैयार हो गए हैं। अतः सभी प्रतिनिधियों (वोटरों) से निवेदन है कि वे अपना पहचान-पत्र सभा कार्यालय में किसीभी कार्यदिवस में 15 नवम्बर 2016 तक प्रातः 10 से सायं 4 बजे तक प्राप्त कर लेवें। **—शेरसिंह, कार्यालयाधीक्षक**

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।